


---

Shri Varahi Devi Stavam

——  
श्रीवाराहीदेविस्तवम्

——  
Document Information



---

Text title : Varahi Stavam

File name : vArAhIstavam.itx

Category : devii, devI, otherforms

Location : doc\_devii

Latest update : August 22, 2010

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

August 22, 2020

*sanskritdocuments.org*

---



श्रीवाराहीदेविस्तवम्



ध्यानम् -

ऐङ्कार द्वयमध्यसंस्थित लसद्भूबीजवर्णात्मिकाम् ।  
दुष्टारातिजनाक्षि वक्रकरपत्सम्भिनीं जृम्भिणीम् ॥  
लोकान् मोहयन्तीं दृशा च महासादंष्ट्राकरालाकृतिम् ।  
वार्तालीं प्रणतोऽस्मि सन्ततमहं घोणिरथोपस्थिताम् ॥  
श्रीकिरि रथमध्यस्थां पोत्रिमुखीं चिद्धनैकसद्रूपाम् ।  
हलमुसलायुधहस्तां नौमि श्रीदण्डनायिकामम्बाम् ॥ १ ॥  
वाग्भवभूवागीशी बीजत्रयठाणवैश्च संयुक्ताम् ।  
कवचास्त्रानलजाया यतरूपां नैमि शुद्धवाराहीम् ॥ २ ॥  
स्वप्नफलबोधयित्रीं स्वप्नेशीं सर्वदुःखविनिहन्त्रीम् ।  
नतजन शुभकारिणीं श्रीकिरिवदनां नौमि सच्चिदानन्दाम् ॥ ३ ॥  
पञ्चदशवर्णविहितां पञ्चम्यम्बां सदा कृपालम्बाम् ।  
अञ्चितमणिमयभूषां चिन्ततिफलदां नमामि वाराहीम् ॥ ४ ॥  
विघ्नापन्निर्मूलन विद्येशीं सर्वदुःखविनिहन्त्रीम् ।  
सकलजगत्संस्तम्भनचतुरां श्रीस्तम्भिनीं कलये ॥ ५ ॥  
दशवर्णरूपमनुवर विशदां तुरगाधिराजसंरूढाम् ।  
शुभदां दिव्यजगत्रयवासिनीं सुखदायिनीं सदा कलये ॥ ६ ॥  
उद्धत्रीक्ष्मां जलनिदि मग्नां दंष्ट्राग्रलग्नभूगोलाम् ।  
भक्तनतिमोदमानां उन्मत्ताकार भैरवीं वन्दे ॥ ७ ॥  
सप्तदशाक्षररूपां सप्तोदधिपीठमध्यगां दिव्याम् ।  
भक्तार्तिनाशनिपुणां भवभयविध्वंसिनीं परां वन्दे ॥ ८ ॥  
नीलतुरगाधिरूढां नीलाञ्चित वस्त्रभूषणोपेताम् ।

नीलाभां सर्वतिरस्करिणीं सम्भावये महामायाम् ॥ ९ ॥  
सलसङ्घमन्त्ररूपां विलसद्गुणां विचित्रवस्त्राढ्याम् ।  
सुललिततन्वीं नीलां कलये पशुवर्ग मोहिनीं देवीम् ॥ १० ॥  
वैरिकृतसकलभीकर कृत्याविध्वंसिनीं करालास्याम् ।  
शत्रुगणभीमरूपां ध्याये त्वां श्रीकिरातवाराहीम् ॥ ११ ॥  
चत्वारिंशद्वर्णकमनुरूपां सूर्यकोटिसङ्काशामी ।  
देवीं सिंहतुरङ्गा विविधायुध धारिणीं किटीं नौमि ॥ १२ ॥  
धूमाकारविकारां धूमानलसन्निभां सदा मत्ताम् ।  
परिपन्थियूथहन्त्रीं वन्दे नित्यं च धूम्रवाराहीम् ॥ १३ ॥  
वर्णचतुर्विंशतिका मन्त्रेशीं समदमहिषपृष्ठस्थाम् ।  
उग्रां विनीलदेहां ध्याये किरिवक्त्र देवतां नित्याम् ॥ १४ ॥  
बिन्दुगणतात्मकोणां गजदलावृत्तत्रयात्मिकां दिव्याम् ।  
सदनत्रयसंशोभित चक्रस्थां नौमि सिद्धवाराहीम् ॥ १५ ॥  
वाराही स्तोरतमेतद्यः प्रपठेद्भक्तिसंयुतः ।  
स वे प्राप्नोति सततं सर्वसौख्यास्पदं पदम् ॥ १६ ॥  
इति श्रीवाराहीदेविस्तवं सम्पूर्णम् ।

---

*Shri Varahi Devi Stavam*

pdf was typeset on August 22, 2020

---

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

